ख़्वाब था जो कुछ कि देखा

(सफ़रनामा-पाकिस्तान)

डॉ राणा प्रताप सिंह
"राणा" गन्नौरी

प्रतिभा प्रकाशन
५, प्रोफ़ैसर्ज़ कालोनी, कैथल
(हरियाणा)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ख्वाब था जो कुछ कि देखा

(सफ़रनामा-पाकिस्तान)

डॉ० राणा प्रताप सिंह
'राणा' गन्नौरी

डॉ0 राणा प्रताप सिंह गन्नौरी
ई-4/2.(भू-तल), गंगा त्रिवेणी अपार्टमेंट
सैक्टर-9, रोहिणी, दिल्ली-110085
दूरभाष-27554075
मो0-9953090007

प्रतिभा प्रकाशन
५, प्रोफ़ैसर्ज़ कालोनी, कैथल (हरियाणा)

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ख्वाब था जो कुछ कि देखा

(सफ़रनामा-पाकिस्तान)

ख्वाब तो देखे हैं मैंने कुछ बहुत अच्छे मगर
कौन कह सकता है उनकी अच्छी ताबीरें भी हैं

अपनी जन्म भूमि (जहानपुर त० अलीपुर जि० मुज़फ़्फ़रगढ़, पाकिस्तान) के पुन: दर्शन के सपने मैं वर्षों से सँजो रहा था किंतु यह आशा नहीं थी कि स्वप्न साकार हो जाएगा, पासपोर्ट मैंने १९८४ में बनवा लिया था २६ मई १९८७ को ईद आई वह ऐसी मुबारक थी कि उससे एक दिन पूर्व कुछ मित्रों (सर्वश्री आर. एल. मदान, ओ. पी गुलियानी, एस. आर. कुमार, शाहिद मकबूल साहब) के सहयोग से मेरा और मेरे दो अन्य साथियों (श्री अर्जुन देव भूटानी और श्री चन्द्र प्रकाश संदूजा—दोनों सोनीपत से) का पाकिस्तान का वीज़ा बन गया। बाद में एक अन्य साथी श्री सोहन लाल ठक्कर भी हमारे सह-यात्री बनने को तैयार हो गए। इसे एक सुखद, संयोग कहना चाहिए कि ईद से एक दिन पूर्व हमारा वीज़ा बना था और दूसरी ईद (६ अगस्त ८७) से एक दिन पूर्व अपनी जन्मभूमि के दर्शन करके हम लौट भी आए थे, स्वप्न सत्य हो गया है किंतु अब यह लगता है जैसे स्वप्न-सा देखा है।

२५ जुलाई १९८७ को स्टेट बैंक आफ इंडिया मेन ब्राँच नई दिल्ली से डालर खरीदने के बाद दिल्ली जंकशन से रात के ८-४५ बजे अटारी स्पेशल से हमने पाकिस्तान के लिए प्रस्थान किया। दिल्ली से चलकर अम्बाला छावनी और उसके बाद अटारी रुकने

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वाली यह गाड़ी उस दिन रास्ते में कई जगह रुकती हुई अगले दिन (२६ जुलाई ८७) सुबह ८-३० बजे दो घंटे लेट अटारी पहुँची। अटारी भारत की उत्तरी रेलवे का अंतिम स्टेशन है। यहाँ सभी यत्रियों को इस गाड़ी से उतरकर जाँच पड़ताल के बाद दूसरी गाड़ी से पाकिस्तान जाना होता है। यहाँ पासपोर्ट, वीज़ा औरसारा सामान 'चैक' कराना होता है। यात्रियों की तलाशी लेने के इस अधिकार का प्रयोग कोई अधिकारी सहानुभूति पूर्वक करता है तो कोई क्रूरता पूर्वक। यात्री अपने साथ प्रायः ऐसी चीजें ले जाते हैं। जिनकी पाकिस्तान में कमी है अर्थात् पान, इलायची, काजू, नारियल, वैल का कपड़ा आदि। कस्टम वाले जाने दें तो ऊंट निकल जाने देते हैं, और यदि अड़जाएँ तो बिल्ली को भी नहीं निकलने देते। यात्रियों से सामान छीनने और पैसा ऐंठने के कई तरीके कुलियों, पुलिस अधिकारियों और कस्टम अधिकारियों ने निकाल रखे हैं। जो काम एक बार लाइन में लगने से हो सकता है उसके लिए तीन-तीन बार लाइन में लगना पड़ता है, और इन सरकारी पंडों को हर बार दक्षिणा देनी पड़ती है और पंडे किसी को कब रसीद देते हैं। ये अधिकारी आपस में भी हेरा फेरी करने से नहीं चूकते। बीच-बीच में एक आधी राशि साझे थैले में न डालकर अपनी जेब में डालते रहते हैं। कुछ इसी तरह की प्रक्रिया जाते और आते समय लाहौर में देखने को मिली। दोनों स्थानों पर यही "कस्टम" (रीति) था कि प्रति दिन हजारों रुपये (Unaccounted money) के रूप में ऐंठे जाएँ। हजारों की रिश्वतें स्थान देकर यहाँ पाने वाले ये अधिकारी ऐसी 'नेक कमाई' क्यों छोड़ने लगे और यहां से स्थानांतरण भी क्यों चाहने लगे। सम्बद्ध मंत्रालय और उच्च अधिकारी इस धांधली से परिचित न हों ऐसा विश्वास नहीं होता।

१९८७ ई० का वर्ष यह गर्मी की प्रखरता और वर्षा की कमी के

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

लिए अद्वितीय है। फिर भी जब हम लोग अटारी पहुँचे तो प्रकृति ने दो घंटे ज़ोर की वर्षा करके मौसम सुहावना बना दिया। यहाँ से आगे धरती और आकाश पाकिस्तान के हैं यह देखकर मुझे १९६४ ई० में लिखी गई अपनी कविता 'ऐ मेरे पंजाब' का यह शेर याद हो आया—

ज़मीं बँट गई आस्माँ बँट गया मुहब्बत का हँसता जहाँ बँट गया

किंतु बादल थे कि पासपोर्ट और कस्टम के सभी नियमों से उदसीन अटारी से लाहौर की ओर कृपा-वृष्टि करने को उड़े चले जा रहे थे। और मैं सोच रहा था—

कोई हाक़िम नहीं महक़ूम नहीं है कोई
कोई ख़ादिम नहीं मख़दूम नहीं है कोई
सब बराबर हैं उसी एक ख़ुदा के बंदे
उसकी रहमत से तो महरूम नहीं है कोई

एक गाड़ी प्रतिदिन लाहौर और अमृतसर के बीच आती जाती है। अटारी की जाँच के बाद हम सब यात्री इसी गाड़ी से लाहौर के लिए रवाना हुए। यहाँ से आने जाने वाली गाड़ियों का प्रस्थान-समय कस्टम वालों की अनुमति पर निर्भर करता है। वाहगा सीमा पर पहुँच कर भारतीय पुलिस के स्थान पर पाकिस्तानी मलेशिया पुलिस गाड़ी का चार्ज ले लेती है। लौटते समय इसके विपरीत प्रक्रिया होती है।

भारत से आने और भारत को जाने वाली गाड़ियों के लिए लाहौर जंकशन का प्लेट फार्म नं० १ निश्चित है। कस्टम वालों ने जंगले लगा कर अपनी व्यवस्था की सुविधा के लिए इसे बहुत तंग

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

बना दिया है जिससे हज़ारों यात्रियों के एक साथ चढ़ने उतरने में बड़ी कठिनाई होती है। लाहौर पहुँच कर भी हम लोग जाँच की कठिन प्रक्रिया में से गुजरे। पाकिस्तान से लौटते समय भी हमें इसी सख्त कसौटी परकसा गया। काशकि दोनों देशों के सम्बन्ध ऐसे मैत्री पूर्ण होते और यात्रीगण समय नष्ट करने वाली इस अपमानजनक बाधा के बिना स्वेच्छा पूर्वक अपने बंधु बाँधवों से मिलने आ जा सकते। वापसी पर हमें तो एक मित्र की कृपा ने कटु अनुभव से बचा लिया किंतु अन्य यात्रियों की दुर्गति होती हुई हमने अपनी आँखों से देखी।

२६ जुलाई १९८७ को सायं चार बजे के लगभग हम कस्टम की कड़ी परीक्षा से सुर्खरू होकर निकले। हमारे पास ऐसा कुछ था भी नहीं जिस पर कस्टम के पंजे गड़ सकते। स्टेशन से बाहर निक-लते ही हाजी अल्लाहदित्ता साहब, उनके साथी अल्लाहबख्श और बच्ची ज़ोहरा बीबी को अपनी प्रतीक्षा में खड़ा देख हमारे हृदय-पुष्प खिल उठे और सफ़र की सारी थकान दूर हो गई। ये लोग पौने पाँच सौ किलोमीटर की दूरी तय करके हमारे स्वागतार्थ लाहौर पहुँचे हुए थे। हाजी साहब और अल्लाहबख्श ने गले मिलकर हमारा स्वागत किया। कुशल क्षेम पूछने के पश्चात ताँगे पे सवार करके हमें पार्क-वे होटल ले चले जहाँ उन्होंने हमारे लिये दो कमरे बुक करा रखे थे।

पार्क-वे होटल पहुँच कर मैंने "नक़ूश" के सम्पादक श्री जावेद तुफ़ैल साहब से टेलीफोन से सम्पर्क किया और उन्हें अपने लाहौर पहुँचे जाने की सूचना दी। दो सप्ताह पूर्व कैथल से लिखा हुआ मेरा पत्र उन्हें मिल चुका था। उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक मुझे नक़ूश-प्रैस उर्दू-बाजार आने का निमंत्रण दिया। स्नान एवं भोजन आदि के पश्-चात हम सब जावेद तुफ़ैल साहब से मिले। उन्होंने बड़े प्रेम से हमारा स्वागत किया और इस प्रथम भेंट में ही हमें ऐसा लगा जैसे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हम उनके चिरपरिचित हैं। उन्होंने हमारे लिए चाय मंगाई मैंने इस बीच अपनी तीन पुस्तकें (तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा रअ़नाई-ए-ख़याल और मेघदूत) भेंट कीं। उक्त तज़करे को देखकर वे बोले—हरियाणा-उर्दू-अकादमी फ़रीदाबाद वालों ने भी मुझे यह किताब दी थी मगर अब यह मेरे पास नहीं है। मेरा एक दोस्त जिसको तज़करे पढ़ने का बहुत शौक है यह किताब ले गया है और अब इसका वापस आना भी मुश्किल है।" मैंने निवेदन किया—"लीजिए मैं इसकी एक और प्रति आपके लिए लाया हूँ। अब यह आपके पास रहेगी। मेघदूत के विषय में मैंने निवेदन किया कि यह संस्कृत के महान कवि कालिदास के मेघदूत का उर्दू पद्यानुवाद है। आपको अवश्य रुचिकर लगेगा।" बोले"संस्कृत काव्य का हम इसके द्वारा आनन्द ले सकेंगे।" पुस्तकें प्राप्त कर के बहुत प्रसन्न हुए। मैंने उनके स्वर्गीय पिता श्री मुहम्मद तुफ़ैल साहब के सम्पादकत्व में निकले "नक़ूश" के विशेषांकों में रुचि प्रकट की तो जावेद तुफ़ैल साहब ने प्रसन्नता पूर्वक चार मोटी-मोटी किताबें (दीवान-ए-ग़ालिब, इक़बाल विशेषांक, ग़ज़ल विशेष अंक और त्रय-मासिक "नक़ूश" का एक क्रमिक अंक) प्रदान कीं। जिनके विशाल आकार, कागज़ और छपाई सब प्रभावशाली हैं। मेरे पास उनका शुक्रिया करने के लिए शब्द नहीं थे। इस बीच चाय आ गई। चाय पीते-पीते उन्होंने कहा—" यदि आप कुछ दिन रुक सकते तो मैं आपको पंजाब विश्वविद्यालय ले चलता वहाँ तकरीबन दो हज़ार पुस्तकें और पाण्डुलिपियाँ हिन्दी संस्कृत की हैं किंतु उनसे लाभान्वित होने वाला यहाँ कोई नहीं। आप फिर कभी पधारें तो अवश्य अधिक समय लेकर आइएगा और उन्हें देखिएगा। सम्भव है आप उनसे कुछ उपयोगी शोध सामग्री जुटा सकें।" मैंने कहा—"ईश्वर ने चाहा और संभव हुआ तो अवश्य ऐसा करूँगा किंतु इस समय तो हमें अपने सफर पर आगे बढ़ना

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

है। हमें इजाजत दीजिए। मैं आपके अनुग्रह का बहुत आभारी हूँ।" उन्होंने बड़ी मुहब्बत से हमें विदाई दी।

"नक़ूश" कार्यालय से हम अनारकली बाज़ार गए जिसे देखकर दिल्ली का चाँदनी चौक याद आ गया। वैसी ही बड़ी-बड़ी, चौड़ी और बिजली की रोशनी से जगमगाती गहरी दुकानें, सैर करने वालों और ग्राहकों की भीड़। लाहौर का यह बाज़ार शताब्दियों से यहाँ का आकर्षण रहा है। यहाँ से हाजी साहब हमें मीनार-ए-पाकिस्तान, जामा मस्जिद और लाल किला दिखाने ले गए। मीनार ए-पाकिस्तान एक विशाल मैदान में निर्मित एक सुन्दर मीनार है। जिस जगह यह बना हुआ है यहीं सन् १९४१ में पाकिस्तान की स्थापना का प्रस्ताव पास किया गया था। मीनार-ए-पाकिस्तान के इस मैदान में दिल्ली के राम लीला ग्राऊँड की तरह बड़े-बड़े समारोह होते हैं और संध्या समय हजारों लोग भ्रमणार्थ यहाँ आते हैं इस मैदान के पश्चिम की ओर एक सुन्दर झील भी है। रात के समय बिजलियों से जगमगाता यह मीनार बड़ा ही नयनाभिराम प्रतीत होता है। जामा मस्जिद और लाल किला यहाँ से समीप ही पड़ते हैं। हमारे पहुँचते-पहुँचते अन्धेरा होना शुरू हो गया था। और लाल किला बन्द हो चुका था। इसे हम केवल बाहर से ही देख सके किन्तु जामामस्जिद के हृदय में हम उतर गए और वह भी अपनी भव्यता के कारण हमारे हृदयों में समा गई। मुगल काल की यादगार यह मस्जिद दिल्ली और आगरा की जामामस्जिदों की बहन प्रतीत होती थी। हाजी साहब ने यहाँ नमाज़ अदा की और हमने भी खुली हवा का सेवन कर कुछ समय के लिए चैन की साँस ली। काश सभी धर्म-स्थल इसी प्रकार सुख और शाँति प्रदायक बन सकते। इसके पश्चात् हम फिर पार्क-वे होटल आ पहुँचे। समय की कमी के कारण लाहौर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



हमारे मेज़बान हाजी ग्रल्लादित्ता साहब
ग्रौर मलिक खैर मुहम्मद साहब श्री सोहनलाल
ठाकुर के साथ



हाजी ग्रल्लादित्ता साहब के घर पर हम तीन
सहयात्री बचपन के साथियों सैय्यद ज़ुलफ़िकार शाह
ग्रौर श्री मन्जूर साहब के साथ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

के अन्य दर्शनीय स्थान जैसे जहाँगीर का मकबरा, नूरजहाँ का मकबरा, इकबाल पार्क, रावी का किनारा आदि हम नहीं देख सके। पुराना लाहौर जो हमने देखा वह बिल्कुल वैसा ही था जैसा आज़ादी से पहले था। नई आबादियों की तरफ हम नहीं जा सके। वे निश्चय ही सुन्दर होंगी। रात के ग्यारह बजे न्यू खान रोड रनर्ज की डीलक्स बस से हम लाहौर से मुलतान के लिए रवाना हुए। फैसलआबाद (लायलपुर), झंग, शोरकोट और कबीखाले के रास्ते २७-७-८७ को प्रातः छः बजे मुलतान पहुँचे। यह बस हमें डेरा अड्डा पर उतार कर डेरागाज़ी खां के लिए रवाना हो गई। लाहौर से मुलतान का किराया पचहत्तर रु० प्रति व्यक्ति लगा। मुलतान पहुँच कर हमने निकटवर्ती एक होटल में नाश्ता किया और हरम दरवाज़े श्री 'ख़ादिम' कैथली के दर्शनों के लिए पहुँचे। 'ख़ादिम' साहब कैथल (हरियाणा, हिन्दुस्तान) से जाकर मुलतान में स्थायी रूप से बस गए हैं। किन्तु आज भी अपने नाम के साथ कैथली लिखते हैं। कैथल में अपने एक पीर मुर्शिद हज़रत कमाल शाह के मज़ार पर दर्शनार्थ भी आ चुके हैं। किन्तु मुझे उनके दर्शनों का अवसर पहली बार आज ही मिल रहा था। नीचे से घण्टी बजाने पर एक बुज़ुर्ग सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आये। लम्बा कद, गम्भीर आकृति, सिर पर टोपी, चेहरे पर दाढ़ी, रोबदार व्यक्तित्व। हाजी साहब तो उन्हें एक बार पहले मिल चुके थे। किन्तु हम अन्य लोग उनके लिए अजनबी थे। मेरा उनका पत्र व्यवहार बरसों से चल रहा था किन्तु भेंट कभी नहीं हुई थी। मैंने अपना नाम बताया तो उन्होंने मुझे गले से लगा लिया। मैंने अपने साथियों का उनसे परिचय करवाया। हम सब को उन्होंने बैठक में बिठाया और चाय नाश्ते के लिए पूछा। हमने निवेदन किया—हम लोग अभी नाश्ता करके ही चले आ रहे हैं। उन्होंने हमें मुलतान में ठहरने के लिए कहा मगर हमारी स्थिति कुछ ऐसी थी कि—

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नज़र फ़रेब नज़ारे यहाँ के हैं बेशक
मगर मुझे तो बराबर कदम बढ़ाना है
न रुक यहाँ मेरे ज़ौके सफ़र न रुक कि अभी
बहुत ही दूर मुझे मंज़िलों पे जाना है

उधर हमारे एक साथी बहुत जल्दी मचाने लगे और हमें "खादिम" साहब से प्रस्थान की अनुमति लेनी पड़ी। दो शायरों की भेंट हुई। न कुछ सुना न कुछ सुनाया। उन्होंने पूछा फिर कब भेंट होगी निश्चित हुआ कि शुक्रवार ३१ जुलाई की शाम को हम आयेंगे। रात को यहीं रहेंगे। आपके कुछ मित्रों के दर्शन करेंगे। यह कार्यक्रम निश्चित करके हम मुलतान से मुज़फ्फरगढ़ के लिये बस से रवाना हुए। "ख़ादिम" साहब के कार्यक्रमानुसार शुक्रवार की रात को एक भव्य साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया जिसकी अध्यक्षता उपनिदेशक लोक सम्पर्क विभाग मुलतान को करनी थी। उन्होंने मुझे भी इस आयोजन की सूचना दी किंतु मुझे आपका पत्र दो दिन बाद मिला। उधर दुर्भाग्यवश हाजी साहब को १०३° का ज्वर हो गया। वो कहते भी रहें कि चलो तुम्हें मुलतान घुमा लाऊँ किन्तु हम उन्हें ज्वर की अवस्था में यात्रा का कष्ट देने को तैयार नहीं हुए। अगले दिन जब हम मुलतान आए और संध्या समय ख़ादिम साहब से मिले तो वह कुछ क्रुद्ध से दिखाई पड़े। उनके मुखमण्डल से उनका मौन रोष व्यक्त हो रहा था। बोले तो कहने लगे मुझे सब दोस्तों के सामने शर्मिन्दा करा दिया आपने। मुलतान के तकरीबन बीस शायर आप की राह देखते रहे।" मैं भी अपने मन में लज्जित हुआ। मैंने स्थिति स्पष्ट की। क्षमा याचना की और एक स्मरणीय गोष्ठी के आनन्द से वंचित रह जाने पर खेद व्यक्त किया। मुलतान के शायरों के दर्शन न कर सकने का खेद मुझे जीवन भर रहेगा। मैंने अपने मेघदूत की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

एक प्रति खादिम साहब को भेंट की। इसे स्वीकार करते हुए उन्होंने अपने सुपुत्र प्रोफ़ेसर ताहिर फ़ारूकी से हमारा परिचय करया। उन्हें अपना सहव्यवसायी पाकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। वे उर्दू कहानी के विषय में शोध कार्य कर रहे हैं। मेरे साथ बहुत सी बातें करना चाहते थे किन्तु समय इसकी अनुमति नहीं दे रहा था। शाम के सात बज रहे थे। हमें बस पकड़ कर १२५ किलोमीटर दूर चौक परमिट पहुंचना था। प्रोफ़ेसर फ़ारूकी साहब से चलते-चलते थोड़ी दूर तक बातचीत हुई। मैंने उनको भारत आने तथा यहाँ उर्दू कहानी पर हुए शोध कार्य से लाभान्वित होने का निमन्त्रण दिया। खादिम साहब और उनके पुत्र से हुई भेंट के बारे में यही कहना पड़ता है कि—

मिल कर भी उनसे मिलने की सूरत न मिल सके

और अब तो उनसे मिलने का एक ही उपाय दिखाई देता है कि वे हज़रत शाह कमाल साहब के उर्स पर कैथल पधारें और हमें अपने दर्शनों तथा रचनाओं से अनुग्रहीत करें।

मुलतान से शेरशाह जंक्शन के रास्ते हम मुज़फ़्फ़रगढ़ के लिए रवाना हुए। शेरशाह जंक्शन से एक रेलवे लाइन मुज़फ़्फ़रगढ़ को और दूसरी शुजाआबाद, लोधरां होती हुई कराची को गई है। मेरे बचपन का एक वर्ष शुजाआबाद में गुज़रा है। चौथी की शिक्षा मैंने वहीं प्राप्त की थी। मेरे पिता वहाँ खाद्य आपूर्ति विभाग में उप-निरीक्षक थे। शेरशाह जंक्शन के पास पहुँच कर बचपन में कहाँ से आना जाना याद हो आया। रेलवे क्रासिंग को पार करके हमारी बस मुज़फ़्फ़रगढ़ की ओर बढ़ चली। अब मेरे मन में चनाब नदी का वह पुल देखने को उत्सुकता थी जिसमें रेलगाड़ी बस और दोनों के गुज़रने के लिए रेलवे लाइन और सड़क बनी हुई थी। मेरा विचार था कि

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अब भी वह पुल वैसा ही होगा जैसा मैंने बचपन में देखा था। किन्तु ४० वर्ष के इस समय में वहाँ उल्लेखनीय अन्तर आ गया था। अब सड़क वाला पुल रेल वाले पुल के ऊपर बना दिया गया था अर्थात् अब रेलगाड़ी के निकलने के लिए बसों को रुक कर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी अपितु नीचे से रेलगाड़ी और ऊपर से बस-ट्रक आदि एक ही समय में गुज़र रहे थे। चनाब की लहरों पर लिखी सोहनी-महीवाल की अमर प्रेम कथा का स्मरण यहाँ पहुंचते ही हो आना स्वाभाविक था।

मुझे बहते जल से भरे पूरे दरिया देखने का बहुत शौक है। यहाँ देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि चनाब में बहुत पानी था। इस पुल से एक दो किलोमीटर पहले ही रावी नदी का पानी भी चनाब में आकर मिल जाता है। पुल पार करके आठ दस किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद हम मुज़फ्फ़रगढ़ पहुँचे वहाँ हम सीधे एस० पी० साहब के कार्यालय गए। यहाँ हाजी साहब के ममेरे भाई मलिक खैर मुहम्मद साहब तशरीफ ले आए, लगभग चालीस वर्ष की उनकी आयु है। छोटा कद और पक्का रंग है। ज़िले भर के अधिकारियों से उनका मेलजोल है। अपने क्षेत्र के एम० एन० ए० (मैम्बर नैशनल असेम्बली) श्री बर्क साहब के वे विश्वस्त और सक्रिय साथी हैं। उन्होंने आते ही एस० पी० साहब के कार्यालय में हमारे आगमन का इन्द्राज कराया। हमारे वीज़ा फ़ार्म लेकर हमें उसकी जगह एक और फ़ार्म दे दिया गया जिस पर भावी दिनों में होने वाले इन्द्राजात होते रहे और जो वापसी पर हमें यहीं पेश करना था। इस औपचारिकता के पश्चात् मलिक खैर मुहम्मद ने हमें एक होटल में ले जाकर खाना खिलाया तत्पश्चात् निकटवर्ती बाज़ार में घूमने के बाद हम लगभग दो बजे अपनी यात्रा की अगली मंजिल यानि चौक परमिट के लिए अग्रसर हुए। रास्ते में ख़ानगढ़, रुहेलावाली और

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

शहर सुल्तान नाम के कस्बों से हम गुज़रे ख़ानगढ़ जो चालीस वर्ष पहले एक गाँव लगता था अब पंजाब के राजमार्ग पर स्थित एक बड़ा कस्बा बन गया था। शहर सुल्तान चनाब के किनारे पर स्थित है और बाढ़ की संभावनाओं से घिरा रहता है इसीलिए चनाब की बाढ़ से बचाने के लिए शहर सुल्तान के तीन ओर ऊँचा बाँध बाँधा गया है। शहर सुल्तान में सैय्यद आलमपीर की दरगाह मशहूर है जहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है और मुशायरे आयोजित किये जाते हैं। चौक परमिट जिसे हम लोग बचपन में लल्ला अर्थात् क्रास या चौक कहा करते थे यहाँ से लगभग १५ किलोमीटर की दूरी पर है।

चालीस वर्ष पूर्व यहाँ कोई आबादी नहीं थी किन्तु अब चौक परमिट पर एक बस्ती सी बसी हुई नज़र आई। पक्के मकान, दुकानें दिन-रात व्यस्त रहने वाला बस अड्डा। यहीं हाजी दित्ता साहब का डेरा है। और यही हमारी मंजिल थी जहाँ हम शाम चार बजे पहुँचे। थोड़ी देर आराम करने और जलपान करने के पश्चात् हम चारों आगन्तुकों को मलिक ख़ैर मुहम्मद साहब अपनी सुज़ूकी कार में जतोई थाने ले गए और हमारे आगमन का इन्द्राज कराया। चौक परमिट से जतोई जाने वाली यह सड़क चालीस साल पहले कच्ची थी। मेरी जन्मभूमि जहानपुर इसी सड़क पर स्थित है। दिनभर में केवल एक दो बसें गुज़रती थीं। मेरे पूज्य पिता बताया करते थे कि यह सड़क ऐतिहासिक मार्ग है। मुहम्मद बिन कासिम ने इसी मार्ग से भारत पर आक्रमण किया था। अब यह सड़क पक्की बन गई है और इस पर दिन रात गाड़ियाँ आती जाती रहती हैं। जहानपुर तथा फुल्लण के बस अड्डों पर हर समय रौनक रहती है। जहानपुर के बाहर से गुज़रते हुए हम जतोई जा रहे थे। खेतों में चारों तरफ हरियाली थी। दूर-दूर तक फले कपास के पेड़ थे। आम और

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

अनार के हरे-भरे बाग़ थे। खजूरों के झुण्ड थे। पानी से भरी और छायादार पेड़ों से घिरी नहरें थीं। नहरों का जाल इस तरह बिछा हुआ था जैसे हमारे यहाँ हरियाणा में सड़कों का जाल बिछा हुआ है।

पाकिस्तानी पंजाब में सिंचाई की शानदार व्यवस्था वहाँ की कृषि की खुशहाली की सूचक है। नहरों के किनारे हर बड़े भाग के साथ सरकारी ट्यूबवैल लगा हुआ है। ज़हाँ से जरूरत पड़ने पर किसानों को बिना किसी प्रकार की अदायगी के पानी प्रदान किया जाता है। पानी की कमी के कारण खेती को सूखने नहीं दिया जाता। परिणामस्वरूप वहाँ फसलें बहुत अच्छी होती हैं। सैकड़ों एकड़ के जमींदार हैं और लाखों रुपए वार्षिक की उनकी आय है। कपास, गेहूँ और गन्ना वहाँ की विशेष उपज है। चालीस वर्ष पूर्व वहाँ नील की खेती भी होती थी। जो अब बन्द कर दी गई है। जमींदार और मज़दूर दोनों खुशहाल हैं। ज़मींदारों में से अधिकाँश के घरों में आयातित कारें और ट्रैक्टर हैं। जनसाधारण के पास भी साइकिलें कम और मोटर साईकिल तथा स्कूटर अधिक दिखाई दिए। डीज़ल और पैट्रोल वहाँ अरब देशों से विपुल मात्रा में पहुँचाया जाता है। इसीलिये उनका अपव्यय भी होता है। बस अड्डों पर बसें आधा घण्टा या घण्टा-घण्टा भर घुर्र-घुर्र करती स्टार्ट खड़ी रहती हैं और किसी को यह विचार नहीं आता कि तेल का अपव्यय हो रहा है। जहाँ भारत में बूंद-बूंद तेल बचाने का अनुरोध किया जाता है और इसके अपव्यय को राष्ट्रीय-हानि माना जाता है वहाँ पाकिस्तानी ट्राँसपोर्टर इस ओर से पूर्णतया उदासीन हैं। अस्तु।

अपने गाँव जहानपुर के चारों ओर की हरियाली खुशहाली देखते हुए हम शाम के साढ़े पाँच बजे जतोई पहुँचे। जतोई मेरे

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

ननिहाल का शहर है। जतोई थाना के मुंशी जी और थानेदार साहब (मियाँ साहब) ने हमारा बड़ा प्रेम से स्वागत किया। ठण्डी बोतलें पिलाकर हमारा आतिथ्य किया। थाने के सारे कर्मचारी हमें वहीं की बोली बोलते देखकर हमें आश्चर्य चकित से देखते रह गए। हर कोई यही प्रश्न करता था—"आप लोग अब यही बोली बोलते हैं ? आपके बच्चे भी यही बोलते हैं ? और हमें यह बताते हुए गर्व होता था कि हम इस बोली को भी न भूले हैं न ही भूल सकते हैं जतोई थाने में इंद्राज कराने के बाद हम रात के लगभग आठ बजे पीरू वाला आ गए।

यह नवाँ पीरू वाला गाँव झलारीं की सीमा में खेतों और बागों के बीच बसी हुई हाजी साहब और उनके निकट सम्बन्धियों की सुन्दर बस्ती है। आधुनिक सुविधाओं से युक्त पक्के और कोठीनुमा मकान जंगल में मंगल किए हुए हैं। यहीं हाजी साहब के निजी मकान में हमें ठहराया गया। हाजी साहब एक धनी-मानी किन्तु साधु-स्वभाव और उदार-हृदय के व्यक्ति हैं। आतिथ्य और संवेदना उनके विशेष गुण हैं। उन्हें अपनी आवश्यकताओं से अधिक दूसरों की आवश्यकताओं का ध्यान रहता है। अपने अनुचरों के प्रति कभी कठोर व्यवहार नहीं करते इसीलिए सबके प्रिय हैं।

इनके सुपुत्र मलिक अब्दुल अज़ीज़ उन्नीस वर्ष के होनहार युवक हैं। इस छोटी आयु में ही विवाहित हैं। ज़मींदारी करते हैं। कार चलाने में दक्ष हैं। कहते हैं—मैं दस वर्ष की आयु से कार चलाने लगा था। हाजी साहब के अन्य परिजन जिनसे हमारा मिलना हुआ सब बड़े मिलनसार और शिष्ट हैं। इनके घरों में बल्कि कहना चाहिये सारे पाकिस्तान में परदे का रिवाज है। महिलाएँ अजनबी पुरुषों के सामने नहीं आतीं। कभी कहीं जाना होता है तो बुर्के में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जाती हैं। किन्तु बड़े नगरों में और शिक्षित लोगों के परिवेश में महिलायें बिना बुर्के के नज़र आती हैं। नौकरी करने वाली स्त्रियाँ और टी० वी० पर खबरेंपढ़ने वाली स्त्रियाँ बुर्के के बगैर होती हैं, किन्तु सिर पर दुपट्टा धारण किये रखना अनिवार्य शिष्टता है। महिलाओं में अधिकतर सूट पहनने का रिवाज है। पुरुषों में अधिकतर लंबी कमीज़ और सलवार पहनते हैं मानो यही पाकिस्तान का राष्ट्रीय परिधान है। दीर्घकाय एवं हृष्ट-पुष्ट युवक इस परिधान में बड़े रोबीले दिखाई देते हैं। बुज़ुर्ग तहमद-कुर्ता पहनते हैं और शहरी लोग कहीं-कहीं पैंट-बुशर्ट भी। यह गर्मी का मौसम था। सर्दियों में सम्भवतः सभी लोग हम लोगों की तरह ही गर्म कपड़े पहनते होंगे, गाँवों में रुई भरी फथूहियाँ या गिड्डियाँ भी शायद सर्दी के पहनावे में शामिल होंगी।

हाजी साहब और उनके अज़ीज़ों ने दस दिन तक हमें एक पल के लिए भी यह अनुभव नहीं होने दिया कि हम अपने घर से एक हज़ार किलोमीटर दूर किसी अन्य देश के अजनबी लोगों के मध्य रह रहे हैं। उन्होंने कारों में ले जाकर हमें जतोई, जहानपुर, फुल्लण, सबायवाला, यातीवाली, शहर सुल्तान, अलीपुर, खैरपुर और हैड पंजनद की सैर करायी। हाजी साहब यद्यपि कालिज या विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं हैं किंतु उन्होंने दुनिया देख रखी है। यूरोप और इस्लामी देशों के बारे में उन्हें विषद जानकारी प्राप्त है। उनका भौगोलिक एवं राजनीतिक बोध बहुत विशद है। चार बार हज कर आए हैं। सच्चे अर्थों में एक हाजी बुज़ुर्ग हैं। इनके ममेरे भाई मलिक खैर मुहम्मद छोटे कद के बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। अशिष्टता न मानी जाए तो उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन एक वाक्य में इस प्रकार किया जा सकता है—"यह पौवा ही सही लेकिन नशा बोतल का देता है।" मलिक साहब ग्रेजुएट हैं, अच्छे वक्ता हैं,

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

धार्मिक और राजनीतिक अभिरुचि रखते हैं अपने क्षेत्र की उन्नति के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। जहानपुर का स्कूल हाई स्कूल बनने वाला है। यहाँ लड़कियों के लिए अलग स्कूल की स्वीकृति करा चुके हैं। फुल्लण का अस्पताल भी इन्हीं की देन है। शेरो शायरी में भी खासी रुचि रखते हैं।

२८ जुलाई ८७ को सुबह सवेरे फुल्लण से मौलवी नूर मुहम्मद साहब पधारे। उनके दर्शन करके हमारी प्रसन्नता का ओर छोर न रहा। चालीस साल पहले मैं और अर्जुनदेव जिस स्कूल में पढ़े थे मौलवी साहब उसके हैडमास्टर थे। मैंने उर्दू का पहला पाठ इन्हीं के स्कूल में पढ़ा था। हम दोनों ने आकर उनके चरण स्पर्श किए। उन्होंने हमें गले लगा लिया और हमें प्रताप और अर्जुन कह कर पुकारा। माता पिता के अतिरिक्त गुरु ही हमें इस नाम से पुकार सकते थे। उनकी रूप आकृति, गोरा चिट्टा रंग, दुबला पतला शरीर ठीक वैसा ही था जैसा चालीस साल पहले मैंने देखा था। इस समय उनकी आयु ८० वर्ष की है फिर भी बिना ऐनक के पढ़ लिख लेते हैं मैंने उनको कुछ दिन पहले एक पत्र में लिखा था कि मैं आपके लिए अपनी पुस्तकें लाऊँगा। दो दिन पश्चात् जब हम फिर फुल्लण में उनसे मिले तो उन्होंने मुझसे पूछा किताबें लाए हो। मैंने निवेदन किया जी हाँ ये लीजिए यह है तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा और यह है राणा।

स्वीकार कीजिए। मैंने खड़े होकर दोनों पुस्तकें उन्हें भेंट कीं उन्होंने दोनों हाथ आगे बढ़ा कर उनको स्वीकार किया। उर्दू का पहला पाठ जो मैंने उनके स्कूल में पढ़ा था यह पुस्तकें उसी का पुष्पित पल्लवित स्वरूप थीं।

हमारे पैतृक गाँव जहानपुर के अड्डे पर भी हाजी साहब की

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जायदाद है अपनी कार में ले जाकर उन्होंने हमें वहीं एक खुले आँगन में उतारा, देखते हो देखते ही वहाँ दो ढाई सौ लोग इकट्ठे हो गए। जहानपुर के लोगों के प्रेम की नदी ठाठें मारने लगी हमारे पास उस समय कैमरा नहीं था नहीं तो हम उस प्रेम को चित्र बद्ध कर लेते इस भीड़ में एक वृद्ध पुरुष था पीरण' मौज में आकर सरायकी में अपनी कविताएँ सुनाने लगे। इन कविताओं में वेदना थी व्यंग्य था और उनके दुखे हुए हृदय की पुकार थी किंतु उर्दू के मशहूर शायर "चिरकी" के काव्य की तरह हर कविता के आखिर में गाली गलोंच भी था जिससे उनकी अभिरुचि के असंस्कृत स्वरूप का पता चलता था।

इसी भीड़ में मेरा बचपन का साथी अब्दुल करीम मिल गया। लम्बा कद, हृष्ट पुष्ट शरीर मैं उसके सामने बहुत छोटा मालूम होता था हम दोनों गले मिले यहाँ से जलपान करने के पश्चात् हम अपने गाँव के गली कूचों और अपने छोड़े हुए मकानों को देखने चले। यहाँ एकत्रित लोगों को भीड़ एक जलूस के रूप में हमारे साथ चली पहले हम स्वर्गीय सैयद गुलाम हैदरशाह के डेरे पर गए। वहाँ उनके सुपुत्र और हमारे सहपाठी सैयद जुलफिकारशाह बड़े प्रेम से गले लगकर मिले एक दूसरे का कुशलक्षेम पूछा और बुजुर्गों के स्वर्ग सिधार जाने पर शोक व्यक्त किया मेरी नजरें इनके चचेरे भाई ज़ीनुलआबदीन को ढूंढ रही थीं मगर वह उस समय वहाँ नहीं थे। ज़ीनुलआबदीन भी मेरे बचपन के सहपाठी थे। बचपन में हम उन्हें जेनू कह कर पुकारते थे,(मुझे यह देखकर बहुत हर्ष हुआ कि अगले दिन प्रातः वो मुझसे मिलने के लिए हाजी साहब के निवास स्थान पर आए। शाह साहब के डेरे से हम अपने घरों की तरफ चले। चलते समय ज़लफिकार भाई ने अपना कलम मुझे उपहार स्वरूप भेंट किया।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिसे मैं जीवन भर जन्म भूमि की निशानी के रूप में सुरक्षित रखने का प्रयास करूँगा।

हमारे गाँव जहानपुर के चारों ओर बड़े-बड़े द्वार थे जो अब अपना अस्तित्व खो चुके है हुक्कीराम हलवाई की दुकान, दरवाजे के अन्दर वाला बाज़ार अब नहीं रहा सब उजड़ा पड़ा है। जैसे हम लोगों के जाने के बाद यहाँ किसी को कारोबार में दिलचस्पी ही न रही हो। हमारा घर, चौबारा, बैठक अभी मौजूद हैं किन्तु चालीस साल पुराने लगते हैं। हमारा डेरा बेरौनक हो गया है। मैं अपना घर अन्दर जाकर देखना चाहता था किंतु कुण्डी बन्द थी और औरतों ने अन्दर से यह कहकर दरवाज़ा नहीं खोला कि घर पर मर्द नहीं हैं घर पर पर्दा है। जहानपुर की गलियाँ कुछ विचित्र ढंग से बन्द कर दी गई हैं जिसका कोई उचित कारण समझ नहीं आता। अर्जुनदेव के घर की गली इस तरह बन्द कर दी गई है कि अपना घर भी तलाश नहीं कर सकते। अलबत्ता उन्होंने अपने बड़े भाई चौधरी हिम्ता राम का मकान अन्दर प्रविष्ट होकर देखा। भाव यह कि हमारे जहानपुर के खेतों में जो रौनक नज़र आई वह घरों, मकानों और बाज़ार में दिखाई नहीं दी।

अपने गाँव को देखकर हर्ष और विषाद दोनों का मिला जुला अनुभव हुआ गाँव को अच्छी तरह देख पाने को साध अधूरी सी रह गई। एक दो दिन गाँव में रह सकता तो शायद कुछ अधिक तृप्ति अनुभव करता। हमारे पुराने मुज़ारों ने अपने गोदों (भूमि देने वालों अथवा ज़मीदारों) अर्थात् हमारे बुजुर्गों को खूब याद किया। पीरण चौकीदार, इलाही बख्श चौकीदार के बेटे और हसन हमें देखकर निहाल हो गए। हसन ने अर्जुनदेव को बचपन में अपने कन्धों पर खिलाया था। वह बोला, मैं आजकल बीमार रहता हूँ लेकिन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

तुम्हें देखकर मेरी बीमारी दूर हो गई है।

जहानपुर से हम सवायवाला गए। इस गाँव के बारे में अर्जुनदेव जी को बहुत सी बातें याद थीं कुछ बातें मेरी स्मृति में भी सुरक्षित थीं। बचपन में मेरी दायीं टाँग पर निकले फोड़े का आप्रेशन यहीं डा० शिवलाल गोसाइं ने किया था। मेरी टाँग पर उस फोड़े का निशान अभी तक मौजूद है। सबायवाला गाँव में खास बात यह थी कि गाँव के बाजार के बीचों-बीच एक नहर ठीक उसी तरह बहती थी जैसे मुगल शासन के समय दिल्ली के चाँदनी चौक में से नहर बहा करती थी। सबायावाला की इस नहर को अब थोड़ा मोड़ देकर गाँव के बाहर से ले जाया गया है। और जहाँ पहले यह बहती थी वहाँ सड़क बना दी गई है। हमें यह जानने की इच्छा बराबर बनी रही कि बाजार के बीचों-बीच नहर बहाने की सूझ किसके उर्वर मस्तिष्क की उपज थी। आये दिन इस नहर में लोगों के गिर जाने की घटनाओं ने सम्भवत: उस सूझ की उपयोगिता को नकार दिया और नहर को उस गाँव से बाहर निकलवा दिया।

इस गाँव के लोगों ने भी हमारा बड़े प्रेम से स्वागत किया। उनके इस प्रेम भाव के प्रमाणस्वरूप एक छोटी सी घटना यहाँ उल्लेखनीय है। हमारा एक पुराना किसान हैदरु अपने एक अज़ीज़ को आवाज़ लगाते हुए बोला—"आ ओए फ़रीदा ! आ डेख। रोज़ पुछदा हावें चौधरी कीवें होंदे हन। आ देख ईवें होंदे हन चौधरी सुहणे।" हमारे बज़ुर्गों की रूप आकृति और उनके प्रति वहाँ के लोगों का श्रद्धा भाव इन शब्दों से स्पष्टत: प्रकट है। दूसरी ओर ७५ वर्ष की एक बुढ़िया को श्री चन्द्र प्रकाश जी ने जब यह बताया कि वह सोनीपत हरियाणा के हैं और सिरसा के इलाके में इनकी ज़मीनें हैं ! तो वह औरत बोली कि वह रतिया की रहने वाली है। उसने पूछा क्या

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वह इलाका अच्छा और खुशहाल नहीं है ? यहाँ के लोग मुझे कहते हैं न जाने किस भूखे इलाके से आ गयी है।''

उसके इन शब्दों में वह वेदना बोल रही थी जो वहाँ के लोकल और यहाँ से जाकर बसे मुहाजिरों के बीच भावात्मक दूरी की सूचक है। दूसरे कई स्थानों पर भी भावात्मक एकता की कमी का अनुभव हुआ। हमारे इलाके के लोग जितने हमारे साथ खुश थे उतने अपने सहधर्मी मुहाजिरों के साथ खुश नहीं थे जिस तरह हम उनके सुख दुःख में पीढ़ियों से शामिल होते आए थे उस तरह मुहाजिर लोग चालीस साल में भी नहीं हो सके। मुहाजरीन को पाकिस्तान में ज़मीनें हमारे अनुपात में अच्छी और ज्यादा मिली हैं। आर्थिक दृष्टि से ये लोग बहुत खुशहाल हैं किंतु भावात्मक स्तर पर संकीर्ण। कुछ इसी तरह की भावनात्मक दूरी से हमें भी शुरु-शुरु में भारत में दो चार होना पड़ा था किंतु अब समय के साथ समाप्त हो गई हैं।

श्री सोहनलाल ठक्कर के बुजुर्ग अलीपुर में रहते थे और श्री चन्द्रप्रकाश के बुजुर्ग खैरपुर सादात में। वे दोनों अपने पैतृक स्थान देखने गए। अलीपुर और खैरपुर सादात मेरे भी श्रद्धा स्थल थे। अलीपुर मेरे गुरुजन स्वर्गीय श्री मोहन लाल शहीद और प० चन्द्रभान मफ़लूक का पैतृक स्थान है। तो खैरपुर सादात स्वर्गीय जयमिनी सरशार साहब का। अत: मैं भी दोनों स्थानों के दर्शनार्थ गया। ठक्कर साहब के बुजुर्गों की सम्पत्ति इस समय श्री अल्लाह डिवाया लशारी के पास है। हम उनसे मिलने उनके निवास स्थान पर गए।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

हमें रास्ते में यह देखकर बड़ा हर्ष हुआ कि अलीपुर में डा० देवराज की हस्पताल की दीवार पर लिखा शरबत फौलाद का इश्तिहार अब भी हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में कायम था। इसी तरह खैरपुर सादात में सनातन धर्म कन्या पाठशाला का नाम पूर्ववत ऊपर हिन्दी में और नीचे उर्दू में लिखा हुआ मिला। यह देखकर बहुत प्रसन्नता हुई कि हिन्दी में लिखे उपरोक्त नाम किसी प्रकार की धर्मान्धता का शिकार नहीं हुए और इस समयभी इस बात को चिन्हित करते हैं कि किसी समय यहाँ हिन्दी को जानने वाले और चाहने वाले रहते थे।

अलीपुर निवासी स्वर्गीय श्री इब्राहीम बर्क (संयुक्त पंजाब मंत्री मंडल में चौधरी छोटू राम के सहमन्त्री) के निवास स्थान पर उनके छोटे सुपुत्र श्री सुलतान अली बर्क के दर्शन हुए। यह महानुभाव बहुत बड़े इंजीनियर भी हैं और साहित्य-प्रेमी भी। इनके एक बड़े भाई ख्याति प्राप्त डाक्टर हैं तो दूसरे पाकिस्तान नैशनल असैम्बली के सदस्य (M.N.A.) हैं। जब सुलतान अली बर्क साहब से मेरा परिचय एक शायर के रूप में कराया गया तो उन्होंने मुझे अगली शाम अलीपुर स्टेडियम में अंजुमान नामानिगारान अलीपुर के तत्वावधान में हो रहे मुशायरे में भाग लेने तथा हम सबको अपने यहाँ रात का खाना खाने का निमंत्रण दिया।

बर्क साहब इस मुशायरे में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। अगली शाम डिनर के बाद हम सब मुशायरे वाली जगह ले जाए गए। अलीपुर नगर पालिका के प्रधान मुशायरे के अध्यक्ष थे। उन

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

के एक ओर बर्क साहब ने स्थान ग्रहण किया और दूसरी ओर मैंने। बातचीत में ज्ञात हुआ कि वे सज्जन समाना मण्डी ज़िला पटियाला से गये हुए हैं और हमारे जहानपुर के 'अलाटी' हैं। मुशायरे में उर्दू और सरायकी (मुलतानी) दोनों भाषाओं के शायर भाग ले रहे थे। उर्दू पाकिस्तान की राज्यभाषा है और सरायकी हमारे इलाके की क्षेत्रीय भाषा। मुशायरे का उर्दू-दौर चल रहा था। मेरा नाम भी सूची में सम्मिलित कर लिया गया। जब उर्दू के स्थानीय शायर अपनी रचनाएँ सुना चुके तो मंच संचालक श्री 'तहसीन' सबायवालवी ने घोषणा की—"अब हमारे एक मेहमान शायर डॉ० 'राणा' गन्नौरी साहब अपना कलाम पेश करेंगे जो इंडिया से आये हैं।"

"मैं माइक पर आया और मैंने अध्यक्ष महोदय एवं श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा—"हज़रात! मुझे मेहमान शायर और इंडिया से आया हुआ कहा गया है। वास्तविकता यह है कि मैं यहाँ से इंडिया गया हूं। यहाँ से कुछ ही कि० मी० दूर स्थित गाँव जहानपुर मेरी जन्मभूमि है। जतोई मेरी ननिहाल का शहर है। मैंने हाजी अल्लाह दित्ता और बर्क साहब की ओर संकेत करते हुए कहा—"मैं आदरणीय हाजी साहब की कृपा से अपनी जन्मभूमि के दर्शन करने आया हूँ और श्री बर्क साहब के अनुग्रह से इस मुशायरे में भाग लेने का गौरव प्राप्त कर रहा हूं। मैं गत कुछ दिनों से पूछता फिर रहा हूं कि यहाँ कौन-कौन शायर आजकल साहित्य सेवा में रत हैं किन्तु मुझे किसी ने किसी के बारे में कुछ नहीं बताया।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

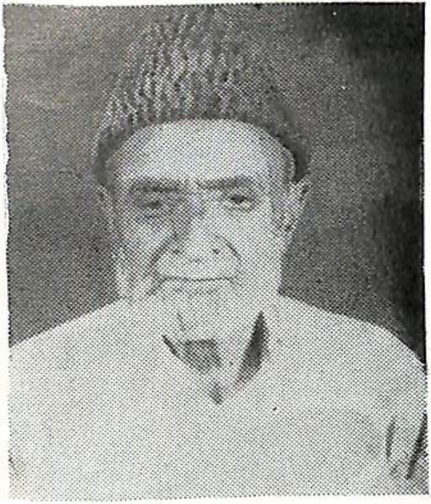
लेकिन मेरा सौभाग्य देखिये कि आज पूरा मुशायरा हाथ लग गया है।

हज़रात ! न मैं आपके लिए अजनबी हूँ न विदेशी हूँ और न आप और आपका शहर मेरे लिए अजनबी है। आपको यह बताते हुए मुझे हर्ष होता है कि मैंने जो "तज़करा-ए-शुअरा-ए-हरियाणा" नाम का ग्रंथ लिखा है उसमें सम्मिलित लगभग एक दर्जन शायर इसी अलीपुर और इसके निकटवर्ती ग्रामों में पैदा हुए हैं। पूज्य जैमिनी 'सरशार' साहब, सर्वश्री मनोहर लाल 'शहीद', उत्तमचन्द 'शरर', चन्द्रभान 'मफ़रूक', 'आतिश' बहावलपुरी, तबस्सुम, अलीपुरी, 'बेताब' अलीपुरी, बेलाराम 'दीवान' हरिश्चन्द्र 'नाज़' बोधराज 'जफ़र' निश्तर साहब और बन्दा-ए-नाचीज़ सब यहीं पैदा हुए हैं। यहीं से इंडिया गये हैं। अतः मैं कोई मेहमान शायर नहीं हूँ। आपका अपना हूं ! अपने ही घर और वतन में हूं। "मैं देख रहा था" कि श्रोतागण मेरे निवेदन से प्रभावित हुए हैं। मैंने कहा—लीजिए अब मेरा टूटा-फूटा कलाम समाअ़त फ़रमाइए, कबूल फ़रमाइये—चन्द क़तए और दो ग़ज़लें पेश हैं—

कोई हाकिम नहीं महक़ूम नहीं है कोई
कोई ख़ादिम नहीं मखदूम नहीं है कोई

सब बराबर हैं उसी एक ख़ुदा के बन्दे
उसकी रहमत से तो महरूम नहीं है कोई

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri



मौलवी नूर मोहम्मद साहब
रिटायर्ड हैड मास्टर, जहानपुर



डॉ० [illegible]
के मुशायरे में कलाम पेश करते हुए। २६-७-८७

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

नज़र फ़रेब नज़ारे यहाँ के हैं बेशक
मगर मुझे तो बराबर कदम बढ़ाना है
न रुक यहाँ मेरे जौके सफ़र न रुक कि अभी
बहुत ही दूर मुझे मन्जिलों पे जाना है

किस पे क्या बीत रही है तुम्हें मालूम नहीं
कौन किस दर्जा दुखी है तुम्हें मालूम नहीं
तुम्हें मालूम फ़क़त ऐशो-तरब की बातें
ग़म भी दुनिया में कोई है तुम्हें मालूम नहीं

जिस शख्स को कुछ काम की बात आती है
बेफ़ायदा वह शोर कहाँ करता है
बाज़ार में आवाज़ लगाता है कहाँ
वह शख्स जो हीरों की दुकां करता है

अब ग़ज़लें सुनिए! आस-पास का सारा माहौल ध्यान में रखिए और शेर सुनिए—

हमें बातों से भरमाने लगे हैं — वो तारे तोड़ कर लाने लगे हैं
कसम हर बात पर खाने लगे हैं — वो अपने झूठ मनवाने लगे हैं
मैं जिनको भूल जाना चाहता हूं — वो बातें आप दुहराने लगे हैं
जो कुछ खोएँगे कुछ पाएँगे भी — कि दोनों हाथ खुजलाने लगे हैं
सितारों का यह ज़ौके खुदनुमाई — कि दिन में भी नज़र आने लगे हैं
तुम्हें आना है आ जाओ नहीं तो — हम अपनी जान से जाने लगे हैं

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

जिन्हें करनी थी 'राणा' रहनुमाई
वो रस्ते से भटक जाने लगे हैं

———

बस वही तो हो सकेगा कामयाबे-ज़िंदगी
ग़ौर से जिसने पढ़ी होगी किताबे-ज़िंदगी
कितनी बीती और कितनी रह गई बाकी अभी
अपने बस का था कहाँ रखना हिसाबे-ज़िंदगी
सबकी हकतल्फ़ी जो कर सकता है अपने वास्ते
लोग उसको मानते हैं कामयाबे-ज़िंदगी
आबो-ताबे ज़िंदगी को गर बढ़ा सकते नहीं
क्यों मिटाने पर तुले हो आबो-ताबे ज़िंदगी
ख़ुदनुमाई की न दी मुहलत ही मौजे-वक्त ने
"कौन सी उम्मीद पर उभरा हबाबे-ज़िंदगी"
लड़खड़ाने दो न अपने पाँव राहे-ज़ीस्त में
होशियारी से पियो 'राणा' शराबे-ज़िंदगी

ये दो ग़ज़लें पेश करके बैठने लगा तो एक और गज़ल की फ़रमाइश हुई तब मैंने निम्नलिखित ग़ज़ल प्रस्तुत की—

राह में बिखरे रोड़े पत्थर राही कब तक फोड़े पत्थर
फिर भी नींद न टूटी उनकी मैंने लाख झंझोड़े पत्थर

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

खुद भी पत्थर बन जाता है — सारी उम्र जो तोड़े पत्थर
इनसे दीवाने का क्या हो — लाए हो जो थोड़े पत्थर
बीती सदियाँ लौट रही हैं — लौट रहे हैं कोड़े पत्थर
खाक सफर तय होगा इनसे — जब हैं तुम्हारे घोड़े पत्थर
इक दिन पर्वत बन जाएगा — जोड़ो थोड़े-थोड़े पत्थर
फूटेंगे पत्थर ही 'राणा'
उलझें अगर हथोड़े पत्थर

श्रोताओं ने दिल खोल कर दाद दी। मेरी इस ग़ज़ल के साथ मुशायरे का उर्दू दौर समाप्त हुआ। अब सरायकी का दौर शुरू हुआ। अलीपुर और उसके निकटवर्ती ग्रामों के अतिरिक्त डेरा गाज़ी खाँ तक के शायर उसमें शामिल हुए। हमारे इलाके के इस वक्त के सबसे अच्छे शायर जांबाज़ जतोई साहब को भी सम्मिलित होना था किन्तु वे किसी कारण नहीं पधार सके और उनके दर्शन करने की अभिलाषा मेरे हृदय में बनी रह गई। किन्तु इस मुशायरे को सुनकर मेरी यह धारणा सत्य सिद्ध हुई कि हमारी तहसील शायर खेज़ (कवि प्रस्विनी) है। अलीपुर के इस मुशायरे में सम्मिलित होना सदैव गर्व और हर्ष का हेतु रहेगा। इस मुशायरे में सम्मिलित अन्य उल्लेखनीय शायर थे महबूब साहब, कुरेशी साहब, गुलाम साहब, नक़वी साहब, बेज़र साहब, जदोदी साहब, तहसीन साहब, मज़हर साहब, प्रो० आबदी साहब।

महँगाई पाकिस्तान में भी खूब है उसका कारण वहाँ अधिकाँश

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

वस्तुओं का आयातित होना था और समाज में पैसे की अधिकता होना है। जिस क्षेत्र में मैं घूमा फिरा हूँ और जिन लोगों से मिला-जुला हूँ उनसे मुझे यही अनुभूति प्राप्त हुई है कि जन-साधारण वर्तमान शासकों से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट हैं। अलबत्ता शायरों की रचनाओं में समाज की कुछ कठिनाइयों का संकेत भी मैंने अनुभव किये हैं। सफ़र के दौरान हाजी साहब के एक अज़ीज़ मुलिक मुश्ताक अली ने मुझसे प्रश्न किया था कि क्या आपको यहाँ कहीं करप्शन का भी अहसास हुआ है उस वक्त मैंने उनको जवाब दिया था कि जहाँ-जहाँ मैं घूमा हूँ वहाँ अभी मुझे यह अहसास नहीं हुआ किन्तु वापसी पर लाहौर स्टेशन के कस्टम अधिकारियों के अमल को देखकर मैं कह सकता हूँ कि करप्शन पाकिस्तान में उसी तरह है जिस तरह हिन्दुस्तान में है और उन लोगों में भी है जो कानून के संरक्षक हैं।

आवास योजनाएँ जैसे भारत में बनाई गई हैं ऐसे ही पाकिस्तान में सरकार बेमकानों को मकान मुहय्या कराने के लिए एक योजना पर अमल कर रही है। हमारे मेज़बानों ने बताया कि यह योजना सात मरला आवास योजना है। जिस प्रकार हमारे यहाँ माप-तोल के पुराने पैमाने अपना अस्तित्व खो चुके हैं ठीक ऐसा वहाँ भी है और शायद यह अन्तर्राष्ट्रीय प्रक्रिया रही होगी। फिर भी अनाज मापने के कुछ पुराने पैमानों का उल्लेख मैं यहाँ करना उचित समझता हूँ। कुछ समय बाद शायद इनके नाम भी याद न रहें, ये माप थे—ठूला, पड़ोपी, टोपा, पई, चोठ, बोरा और पथ।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

भारत और पाकिस्तान की करंसी में भी कुछ फ़र्क है। प्रायः हम सुना करते थे कि भारत के सौ रुपए के बदले पाकिस्तान के १२० रुपए मिलते हैं किन्तु व्यक्तिगत अनुभव यह हुआ कि दिल्ली जंक्शन पर सौ के बदले ११२ रुपए मिले और पाकिस्तान जाते समय सौ के बदले ११० रुपए मिले। अमरीकन डालर के हिन्दुस्तानी १३ रु० ३० पैसे के बदले पाकिस्तानी १७ रु० ४२ पैसे मिले। वापसी पर अटारी में जब हमने करंसी बदलनी चाही तो फिर करप्शन का बोलबाला पाया यानि पाकिस्तानी १०० रु० के बदले हमें हिन्दुस्तानी ७५ रु० दिए गए।

एक सप्ताह अपनी जन्मभूमि की गोद में रहने और विशेष प्रकार का आत्मिक आनन्द महसूस करने के बाद हम ३ अगस्त १९८७ की सुबह वापसी के लिए तैयार हो गए। सोमवार ३ अगस्त को मलिक खैर मुहम्मद साहब अपनी कार में फिर जतोई थाना ले गए। इन्द्राज रवानगी से पहले मैंने जतोई शहर देखने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि हमने अभी तक इस शहर को छुआ अवश्य था देखा नहीं था। मैंने और अर्जुन देव ने अपने ननिहाल के मकान देखे। हकीम नन्दलाल का दवाखाना, पाठशाला, हाई स्कूल, सीधा बारौनक बाज़ार तथा जतोई के विभिन्न मौहल्ले देखे। हाई स्कूल जो १९४७ में मिडिल स्कूल था वह विद्यालय था जिसमें हमारे बुजुर्गों ने शिक्षा प्राप्त की थी। यहीं अर्जुनदेव जी जतोई के वर्तमान M.N.A. सरदार नज़र मुहम्मद सुपुत्र स्वर्गीय सरदार नसरुल्ला खान साहब के साथ

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

आठवीं में हम जमात रहे थे। जतोई शहर सुलतान, खैर पुर आदि कस्बों के बाजारों में एक विशेष बात जो हमने देखी कि ग्रीष्म के उग्र ताप से बचने के लिए खजूर के पत्तों की बनी चटाइयाँ बाज़ार के दोनों ओर दुकानों पर रखी गई बल्लियों पर डाल कर छाया कर ली जाती है जिससे सारे बाज़ार में ठंडक रहती है यद्यपि इस उपाय से रोशनी अवश्य कुछ कम हो जाती है।

जतोई थाना में इन्द्राज करा कर तथा मुंशी जी तथा मियाँ जी से मुहब्बत भरी विदाई लेकर हम जहानपुर के रास्ते अपनी जन्म-भूमि को मन ही मन नमस्कार करते फुल्लण पहुँचे। वहाँ मौलवी नूर मुहम्मद साहब के पुन: दर्शन हुए। उनके चरण स्पर्श कर तथा उनका आर्शीवाद लेकर वहाँ से हम चौक परमिट पहुँचे। अब यहाँ से हाजी साहब, मलिक खैर मुहम्मद, हाजी अब्दुल अज़ीज़, मलिक मुश्ताक अहमद, अल्लाह बख़्श और उनका एक और साथी तीन कारों में हमें और हमारे सामान को लेकर मुलतान जंक्शन तक हमें अलविदा कहने आए। हम चारों अतिथियों को हाजी साहब ने उपहार स्वरूप वस्त्र, खजूरें और अनार आदि देकर इस प्रकार अलविदा कहा जिस प्रकार कोई अपने घनिष्ठ सगे सम्बन्धियों को विदा करता है। लौटते हुए हमने स्वयं यह इच्छा व्यक्त की कि हम वापसी पर पाकिस्तानी रेल की यात्रा करना चाहते हैं अत: निश्चित हुआ कि मुलतान से लाहौर जाने वाली हज़रत मूसा एक्सप्रैस पकड़ी जाए। पहले एक बजे दोपहर मुज़फ़्फ़रगढ़ के S. P. कार्यालय में

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

उपस्थित होकर हमने वापसी का विधिवत् इन्द्राज कराया।

तत्पश्चात् हम मुलतान के लिए रवाना हो गये। S. P. आफ़िस मुज़फ्फ़रगढ़ में मुझे अपने एक मित्र श्री रईस क़मर के कोट सुलतान से पधारने की आशा थी। उनसे उनके शहर जाकर मिलने का समय हम नहीं निकाल सके थे। उनसे मेरा पत्र व्यवहार गत एक वर्ष से चल रहा था। दर्शनों की अभिलाषा थी जो पूर्ण नहीं हुई। उनसे भेंट होती तो उनके एक नये प्रकाशन 'बयाजे-यक्ता' के भी दर्शन होते जिसमें पाकिस्तानी शायरों के अतिरिक्त ८० के लगभग भारतीय शायरों की रचनायें भी सम्मिलित की हैं जिनमें से एक मैं भी हूँ। इस पुस्तक में मेरे द्वारा लिखी हुई तकरीज़ (भूमिका) भी उन्होंने सम्मिलित की है जिसकी सूचना वे मुझे अपने पत्र द्वारा दे चुके हैं। अब न जाने उनसे कब और कैसे भेंट होगी। मुलतान पहुँचकर हमने खाना खाया। हम चार सहयात्रियों में से ठक्कुर साहब को छोड़ कर तीनों शाकाहारी थे। हाजी साहब के परिवार में तो हमारे लिए शाक सब्जी की व्यवस्था अलग से रहती थी किन्तु पाकिस्तान के होटलों पर हम शाकाहारियों को बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था। हाजी साहब और उनका परिवार हमारे धन्यवाद के पात्र हैं कि अपने घरों में उन्होंने अनावश्यक कष्ट उठा कर भी हमें भोजन सम्बन्धी कठिनाई का अनुभव नहीं होने दिया।

मुलतान जंक्शन पर हाजी साहब और उनके अज़ीज़ों ने गले लगा लगा कर हज़रत मूसा एक्सप्रैस से शाम चार बजे विदा किया।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

गाड़ी के द्वितीय श्रणी के डिब्बों में भी सुविधाजनक सीटें थीं। जहाँ भारतीय रेलों का रंग प्राय: लाल होता है वहाँ पाकिस्तानी रेलों का रंग हरा होता है। डीज़ल इंजन से चलने वालो एक्सप्रैस गाड़ियाँ काफी तेज़ गति से चलती हैं और इनमें सभी सुविधायें उपलब्ध रहती हैं। रात के १० बजे हम लाहौर पहुँचे। फिर वही कुलियों और कस्टम वालों का अज़ाव सहते हुए अगले दिन दोपहर डेढ़ बजे लाहौर से भारत के लिए रवाना हुए। अटारी में फिर कस्टम वालों और कुलियों का सितम झेल कर रात के साढ़े दस बजे अटारी से दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। मैं अम्बाला छावनी उतर कर कुरुक्षेत्र होता हुआ और मेरे तीनों सहयात्री सोनीपत उतर कर ५ अगस्त १९८७ को प्रातः साढ़े आठ बजे कुशलपूर्वक अपने-अपने घर पहुँच गए। हमारा चिर स्वप्न साकार हो गया और अब लगता है जैसे स्वप्न-सा देखा है।

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri

CC-0 Kashmir Research Institute. Digitized by eGangotri